SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अशोक के धम्म और भारतीय सांस्कृतिक धरोहरः एक ऐतिहासिक विश्लेषण

सुनील कुमार वर्मा, पी–एचडी., इतिहास विभाग
माँ विन्ध्यवासिनी संध्याकालीन स्नातक महाविद्यालय, पद्मा, हजरीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुनील कुमार वर्मा, पी–एचडी.
E-mail : verma.565@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/07/2025
Revised on : 15/09/2025
Accepted on : 24/09/2025
Overall Similarity : 00% on 16/09/2025

शोध सार

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में से एक थे, जिनका शासनकाल (273 ई.पू. – 232 ई.पू.) केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक का जीवन निर्णायक रूप से परिवर्तित हुआ और उन्होंने हिंसा के मार्ग को त्यागकर धम्म को शासन और जीवन का आधार बनाया। अशोक का धम्म मूलतः बौद्ध धर्म से प्रेरित था, किन्तु यह किसी एक संप्रदाय विशेष तक सीमित न रहकर सार्वभौमिक नैतिक आचार संहिता के रूप में उभरा। इसमें सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, प्राणीमात्र की रक्षा, स्त्रियों के सम्मान, माता–पिता एवं आचार्य के प्रति कर्तव्यपालन और धार्मिक सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्य समाहित थे। अशोक ने अपने धम्म के प्रचार के लिए स्तंभों, शिलालेखों और गुफा–लेखों का सहारा लिया, जो आज भी भारतीय इतिहास और संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। दिल्ली–टोपरा, सारनाथ, लौरिया–नंदनगढ़ और प्रयाग जैसे स्थानों पर स्थित उनके शिलालेख न केवल तत्कालीन प्रशासन और विचारधारा का प्रमाण हैं, बल्कि भारतीय स्थापत्य और सांस्कृतिक वैभव के प्रतीक भी हैं। विशेष रूप से सारनाथ का सिंह स्तंभ, जो आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है, अशोक की धरोहर और भारतीय सांस्कृतिक पहचान का गौरवशाली प्रतीक है। अशोक का धम्म भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर ले जाने का माध्यम भी बना। उनके शासनकाल में धर्मयात्राएँ और धम्म महामात्रों की नियुक्ति द्वारा शांति और सद्भाव का प्रचार–प्रसार हुआ। धम्म का प्रभाव श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड और अन्य एशियाई देशों तक पहुँचा, जिससे भारतीय संस्कृति का अंतरराष्ट्रीय प्रसार हुआ। इस प्रकार अशोक का धम्म भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को न केवल मजबूत करता है, बल्कि उसे वैश्विक

परिप्रेक्ष्य में भी प्रतिष्ठित करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से अशोक का युग भारतीय कला, वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास का स्वर्णिम काल माना जाता है। साँची और भरहुत के स्तूप, बाराबर की गुफाएँ तथा अशोक स्तंभ भारतीय स्थापत्य और कलात्मक परंपरा की अद्वितीय मिसाल हैं। इन कृतियों में केवल धार्मिक महत्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा और वैश्विक मानवीय आदर्शों की झलक दिखाई देती है। निष्कर्षतः, अशोक का धम्म भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत प्रतीक है। यह केवल बौद्ध धर्म का प्रसार नहीं था, बल्कि सार्वभौमिक मानवतावादी मूल्यों का प्रचार था। उनके धम्म और स्थापत्य धरोहर हमें वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का स्मरण कराते हैं। आधुनिक युग में भी, जब वैश्विक शांति, सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता की आवश्यकता है, अशोक के धम्म का ऐतिहासिक विश्लेषण हमें यह समझने का अवसर देता है कि सांस्कृतिक धरोहर केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

मुख्य शब्द

धम्म, अहिंसा, शिलालेख, सार्वभौमिक, गौरवशाली, सहिष्णुता.

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का नाम एक ऐसे शासक के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने युद्ध और साम्राज्य विस्तार की परंपरा को त्यागकर नैतिकता, धर्म और मानवीय मूल्यों पर आधारित शासन की स्थापना की। मौर्य वंश के इस महान शासक का जीवन विशेषकर कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) के बाद एक क्रांतिकारी मोड़ पर पहुँचा, जब उन्होंने रक्तपात और हिंसा की व्यर्थता को समझते हुए अहिंसा और करुणा का मार्ग अपनाया। इसी परिवर्तन के फलस्वरूप अशोक ने 'धम्म' को अपने शासन और जीवन का आधार बनाया।

अशोक का धम्म बौद्ध धर्म से प्रेरित होते हुए भी किसी संकीर्ण धार्मिक सीमा में बंधा नहीं था। यह एक ऐसी नैतिक–सामाजिक आचार संहिता थी जिसमें सत्य, अहिंसा, प्राणीमात्र की रक्षा, सहिष्णुता, स्त्रियों का सम्मान, माता–पिता एवं आचार्य के प्रति श्रद्धा और विभिन्न धर्मों के बीच पारस्परिक सम्मान जैसे सार्वभौमिक मूल्य समाहित थे। इन मूल्यों ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की दिशा और स्वरूप को नई ऊर्जा प्रदान की। इस दृष्टि से अशोक का धम्म केवल राजनीतिक या धार्मिक विचारधारा न होकर भारतीय संस्कृति की आत्मा का विस्तार था।

अशोक ने अपने धम्म को समाज में स्थापित करने के लिए स्तंभों, शिलालेखों और गुफा–लेखों का सहारा लिया। इन अभिलेखों में अंकित उनके उपदेश आज भी भारतीय इतिहास और संस्कृति की अमूल्य निधि माने जाते हैं। सारनाथ का सिंह स्तंभ, जो आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है, अशोक की धरोहर और भारतीय सांस्कृतिक पहचान का गौरवपूर्ण प्रतीक है साथ ही साँची, भरहुत और अमरावती के स्तूप, बाराबर की गुफाएँ तथा विभिन्न स्थानों पर स्थापित अशोक स्तंभ भारतीय स्थापत्य कला और सांस्कृतिक विरासत के अमर उदाहरण हैं।

अशोक का धम्म केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं रहा, बल्कि श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड और तिब्बत जैसे देशों तक पहुँचा। इस प्रकार यह भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय प्रसार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का आधार भी बना। वास्तव में, अशोक की नीतियाँ वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का मूर्त रूप थीं, जो भारतीय संस्कृति का स्थायी आदर्श है।

इस ऐतिहासिक विश्लेषण का उद्देश्य केवल अशोक के धम्म और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को समझना ही नहीं है, बल्कि यह भी ज्ञात करना है कि किस प्रकार एक शासक के नैतिक निर्णय ने संपूर्ण समाज और संस्कृति को प्रभावित किया। आज के समय में जब वैश्विक स्तर पर शांति, सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता की आवश्यकता है, अशोक का धम्म हमें यह सिखाता है कि संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की प्रेरणा भी है।

शोध उद्देश्य

"अशोक के धम्म और भारतीय सांस्कृतिक धरोहरः एक ऐतिहासिक विश्लेषण" विषय पर शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार अशोक की धम्म नीति ने भारतीय संस्कृति और समाज को नई दिशा प्रदान की। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने हिंसा का परित्याग कर सत्य, अहिंसा, करुणा, प्राणीमात्र की रक्षा, स्त्रियों के सम्मान और धार्मिक सहिष्णुता जैसे मूल्यों पर आधारित जीवन और शासन का आदर्श प्रस्तुत किया।

इस शोध का पहला उद्देश्य अशोक के धम्म के स्वरूप और उसके नैतिक–सामाजिक आयामों का विश्लेषण करना है। दूसरा उद्देश्य धम्म प्रचार के साधनों जैसे शिलालेख, स्तंभ, गुफाएँ और स्तूप के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर पर पड़े प्रभाव को स्पष्ट करना है। तीसरा उद्देश्य यह जानना है कि अशोक का धम्म भारत से बाहर श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार और अन्य एशियाई देशों में कैसे फैला और भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार का आधार कैसे बना।

अंततः, इस शोध का उद्देश्य यह भी है कि अशोक के धम्म को आधुनिक समाज में शांति, सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता के संदर्भ में पुनः समझा जाए। इस प्रकार यह अध्ययन केवल ऐतिहासिक विवेचन ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर और समकालीन प्रासंगिकता का भी आकलन है।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है साथ ही प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र– पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध – कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

अशोक, जिसे उसके अभिलेखों में देवानामप्रिय, देवानामपियदसि, राजा तथा पुराणों में अशोक वर्धन कहा गया है। भ्राबू अभिलेख में उसे प्रियदर्शी जबकि मास्की में बुद्ध शाक्य कहा गया है। अशोक नाम का उल्लेख उनके चार अभिलेखों में मिलता है। यह प्रमुख चार अभिलेख है – मास्की, गुर्जरा, नेत्तुर और उडेगोलम। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में भी अशोक का नाम का उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रंथ महाबोधि वंश में इसकी माता का नाम धम्मा मिलता है जबकि दिव्यवादन में इसकी मां का नाम पासादिक प्राप्त होता है। एक ग्रंथ अशोक अवदान माला में इसकी माता का नाम सुभद्रांगी वासियों बताया गया है। स्मिथ के ग्रंथ अशोका में भी इसकी माता का नाम सुभद्रांगी बताया गया है।

अशोक बिंदुसार एवं सुभद्रांगी का संतान था। अशोक के कई पत्नियों का उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रंथों असंधिमित्रा, महादेवी, पद्मावती, तिष्यरक्षिता तथा अशोक के प्रयाग स्तंभ लेख में कारुवाकी का नाम प्राप्त होता है। बौद्ध ग्रंथो से अशोक की दो पुत्री संघमित्रा तथा चारुमति के बारे में जानकारी मिलती है। उसके दो पुत्रों कुणाल और महेंद्र के नाम का वर्णन मिलता है। उसके प्रयाग स्तंभ लेख में एक पुत्र तिवार का भी उल्लेख मिलता है।

बिंदुसार के निधन के पश्चात् 273 ई. पू. में मौर्य वंश का तीसरा अशोक शासक बना जिसका राज्यारोहण 4 वर्ष बाद 269 ई. पू. में हुआ। अपने 37 वर्ष के शासनकाल में अशोक अपने को एक महान सम्राट के रूप में प्रतिस्थापित किया। अदम्य साहसी, सैन्य कौशल, प्रशासकीय कुशलता एवं उदारता तथा धार्मिक सहिष्णुता और माननवीयता का एक अद्भुत समिश्रण उसके व्यक्तित्व में विद्यमान था इसलिए उसे विश्व के किसी भी सम्राट से अतुलनीय बना देता है।

प्रारंभिक जीवन

अशोक बिंदुसार के समय अवन्ति (उज्जैन) का उपराजा था। बिंदुसार के मृत्यु के बाद 273 ई.पू. में अशोक सम्राट बना, किंतु उसका विधिवत राज्याभिषेक 269 ई. पू. में हुआ। उसके बीच के चार वर्ष सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ा। महावंश के अनुसार प्रभुसत्ता प्राप्त करने के चार वर्ष बाद विख्यात अशोक ने स्वयं पाटलिपुत्र नगर के

राजा के रूप में अपना राज्याभिषेक किया। सिंगली अनुसूचियां का कहना है कि अशोक अपने 99 भाइयों की हत्या कर शासक बना और वह बौद्ध होने से पूर्व चंडअशोक था। तारानाथ के अनुसार अशोक ने अपने केवल 6 भाइयों की हत्या की थी। अशोकावदान में अशोक का नाम जय बताया गया है जिसकी उपाधि चंडअशोक थी हालांकि यह सत्य नहीं है, क्योंकि अशोक के पांचवें अभिलेख में उसकी जीवित भाइयों के परिवारों का उल्लेख मिलता है। दूसरे महावंश में वर्णित है कि अशोक ने अपने छोटे भाई शिष्य को उपराजा का पद दिया परंतु उसके बौद्ध भिक्षु हो जाने पर महेंद्र इस पद पर आसीन हुए थे। अतः अशोक के पारिवारिक संबंध मधुर थे। अशोक ने राधागुप्त के कहने पर पाटलिपुत्र में नरक द्वार (रमणीयबंधन) बनवाया। ह्वेनसांग उज्जैन में एक दूसरा नरक गृह का वर्णन करता है और यह नरक स्तंभ देखने का दावा करता है।

कलिंग युद्ध (261 ई. पू.)

अशोक भी अपने पूर्वजों की भांति साम्राज्यवादी विचारधारा रखता था। अशोक के 13वें शिलालेख से ज्ञात होता है कि उसने अपने राज्याभिषेक के 8वें वर्ष 261 ई. पू. कलिंग की विजय किया था। विभिन्न इतिहासकारों के द्वारा इस युद्ध के निम्नलिखित कारण बताए गए हैं:

1. अशोक की विस्तारवादी नीति।
2. अशोक की दृष्टि कलिंग के व्यापारिक महत्व पर थी। अर्थशास्त्र के अनुसार कालिंग सूती वस्त्रो के निर्माण के लिए बहुत प्रसिद्ध था। कलिंग बंगाल श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया के दीप समूहों के मध्य में स्थित था।
3. समुद्री डाकुओं पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए।
4. कलिंग से हाथी प्राप्त करने के लिए क्योंकि चाणक्य का कथन है कि राजा की विजय हाथियों पर जितनी निर्भर है उतनी किसी अन्य चीज पर नहीं और कालिंग अपने उत्तम हाथियों के लिए विश्व प्रसिद्ध था।

कलिंग युद्ध का परिणाम

1. कलिंग की स्वतंत्रता का अंत हुआ। इस मगध साम्राज्य का एक प्रांत बना लिया गया। कलिंग में दो अधीनस्थ प्रशासनिक केंद्र स्थापित किए गए। उत्तरी केंद्र एवं दक्षिणी केंद्र। उत्तरी केंद्र जिसकी राजधानी तोसली थी और दक्षिणी केंद्र जिसकी राजधानी जौगढ़ बना दी गई थी।
2. इस युद्ध में कलिंग वासियों को भारी हानि हुई थी। अशोक के 13वें शिलालेख के अनुसार युद्ध में डेढ़ लाख लोगों को बंदी बनाया गया था एवं एक लाख लोगों की हत्या की गई थी तथा कालांतर में इससे भी कई गुना लोग मारे गये।
3. अशोक कलिंग युद्ध के हृदय विदारक हिंसा को देखकर इतना द्रवित हो गया और भविष्य में युद्ध न करने की घोषणा कर दिया। इतिहासकार हेमचंद्र राय चौधरी के अनुसार बिंबिसार द्वारा प्रतिपादित और उसके सभी उत्तराधिकारियों द्वारा अनुमोदित अग्रगामी विस्तारवादी एवं साम्राज्यवादी नीति को अशोक ने हमेशा के लिए त्याग दिया और एक नए युग का सूत्रपात हुआ जो शांति सामाजिक प्रगति एवं धार्मिक प्रचार का था। इस युद्ध में अशोक को चंड अशोक से धम्मा अशोक में परिवर्तित कर दिया।
4. कलिंग विजय से मौर्य साम्राज्य को नए समुद्र तक और बंदरगाह प्राप्त हुए होंगे जिससे उसका सामुद्रिक व्यापार बढ़ा होगा। कालिंग को अपनी सैनिक चौकी बनाकर अशोक ने समुद्री लुटेरों का दमन किया और बंगाल की खाड़ी को सामुद्रिक यातायात हेतु सुरक्षित किया।

अशोक का धर्म परिवर्तन

अशोक प्रारंभ में ब्राह्मण धर्म का अनुयाई था। बिंदुसार एवं अशोक के विषय में प्रचलित है कि वह प्रतिदिन 60,000 ब्राह्मण का भोजन करवाते थे। कल्हण अशोक को शिव का उपासक बताते हैं। कलिंग युद्ध के बाद वह बौद्ध धर्म को अपना लिया। सिंहली अनुश्रुतियों में उसे बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का श्रेय न्यूग्रोथ को दिया गया है जो

7 वर्ष की आयु में बौद्ध भिक्षु बन गया था। तत्पश्चात् मोगलीपुततिस्स के प्रभाव में आने से अशोक पूर्ण रूपेण बौद्ध धर्म का को अपनाया। वहीं दिव्यावदान के अनुसार बालपंडित नामक व्यापारी के प्रभाव के कारण उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था और उपगुप्त ने उसे बौद्ध धर्म की दीक्षा दिया था। तारानाथ में अशोक को तांत्रिक बौद्ध (मातृ देवी) का उपासक बताया है। बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद ढाई वर्ष तक अशोक साधारण उपासक रहा। इसके बाद बौद्ध संघ में सम्मिलित हुआ और भिक्षु गतिक बना। वे गृहस्थ जो कुछ समय तक बिहार में निवास करते थे भिक्खुगतिक कहलाते थे। महत्वपूर्ण है कि अशोक ना तो कभी संध्याध्यक्ष बना और ना ही कभी भिक्षु बना। वह केवल उपासक बौद्ध ही बना रहा। अतः स्मिथ का यह मत तर्कसंगत नहीं है कि अशोक एक ही साथ भिक्षु एवं सम्राट दोनों था। इत्सिंग कहता है कि अशोक की एक मूर्ति देखी थी जिसमें वह बौद्ध भिक्षु की वेशभूषा धारण की किये हुए है। गोबी मरुस्थल में तुनहयांग नमक मठ की एक गुफा के भित्ति – चित्र में अशोक को बुद्ध की मूर्ति वह बौद्ध वृक्ष की डाल लंका भेजते हुए दिखाया गया है। भ्राबू अभिलेख में अशोक कहता है कि जो कुछ भगवान बुद्ध ने कहा है सही कहा है। मास्की लेख में स्वयं को बुद्ध उपासक कहा है। वह बुद्ध को भागवत कहता है।

अशोक का धम्म

विश्व में अशोक को जिससे सबसे अधिक प्रसिद्धि मिली है, वह उसका धम्म है। धर्म को ही प्राकृत में धम्म कहते हैं। अशोक के धम्म का अभिज्ञान उसके अभिलेखों के अध्ययन एवं मनन से प्राप्त होता है। यह विशुद्ध व्यावहारिक, अति सरल एवं सर्वग्राम्हा अचार तत्वों से संबंधित है। अशोक ने अपने अभिलेखों में धर्म को परिभाषित किया है। इसमें धम्म को विधायी पक्ष के साथ–साथ इसके निश्चरात्मक पक्ष का भी उल्लेख किया है।

दूसरे स्तंभ लेख में अशोक स्वयं प्रश्न करता है कि "कियं चु धम्में" (धम्म क्या है?)। जिसका उत्तर वह स्वयं दूसरे और सातवें अभिलेख में वर्णित करता है। पापहीनता, बहुत कल्याण, दया, दान, सत्यवादिता, पवित्रता, मृदुता, साधुता ही धम्म है। अशोक के धम्म के विधायी तत्व निम्नलिखित हैः

1. प्राणियों की हत्या न करना।
2. प्राणियों को क्षति न पहुंचना।
3. माता–पिता एवं वृद्ध जनों की सेवा करना।
4. गुरुओं का सम्मान करना।
5. ब्राह्मणों, श्रवणों, मित्रों, परिचितों के साथ अच्छा व्यवहार एवं वार्तालाप करना।
6. दासों, नौकरों के साथ अच्छा बर्ताव करना।
7. अल्प व्यय और अल्प संचय।

अशोक ने अपने तीसरे अभिलेख में कुछ पापों का उल्लेख कर किया है जो धम्म के मार्ग में बाधा उपस्थित करते हैं। ये निष्ठुरता, चण्डता, क्रोध, घमंड और ईर्ष्या है। विधायी तत्वों को अपनाकर और निषेधात्मक तत्वों को त्याग कर मनुष्य धर्म का पूर्ण पालन कर सकता है। इसके लिए उसे अल्प निरीक्षण करते रहना चाहिए आत्म – निरीक्षण के लिए अभिलेखों में परीक्षा शब्द का प्रयोग किया गया है। आत्म निरीक्षण से असिनव को पहचानने और उसे नष्ट करने में सहायता मिलती है। अशोक अपने 7वें शिलालेख में दावा किया है कि धम्म का अनुसरण करने पर व्यक्ति को इहलोक या परलोक में सुख प्राप्त होगा।

अशोक अपने धम्म में आचरण पक्ष को प्रोत्साहित करता है। कर्मकांडीय पक्ष की उपेक्षा करता है। अशोक ने अपने 9वें शिलालेख में धम्म मंगल, 11वें शिलालेख में धम्मदान एवं 13वें शिलालेख में धम्म विजय का उल्लेख किया है।

धम्म मंगलः विवाह, पुत्र जन्म, यात्रा आदि अवसरों पर अनेक मंगलाचरण महिलाओं द्वारा किए जाते हैं जो तुच्छ व निरर्थक है। 9वें शिलालेख में अशोक कहता है कि गुरुजनों का साथ अच्छा व्यवहार, प्राणियों के साथ अच्छा व्यवहार दासों एवं सेवकों से श्रेष्ठ बर्ताव करना धम्म मंगल है, जो श्रेष्ठ और बहुत फल देने वाला है।

धम्मदानः 11वें शिलालेख के अनुसार दासों और सेवकों के प्रति उचित व्यवहार, माता–पिता की सेवा, मित्रों, परिचितों, संबंधियों, ब्राह्मण और श्रमणों के प्रति उदारता और अहिंसा ही धर्मदान है, जो साधारण दान से अधिक उत्तम एवं सर्वोत्तम है।

धम्म विजयः अशोक के 13वें शिलालेख में धम्म विजय का उल्लेख मिलता है। धर्मोपदेश और धर्म विधानों को सुनकर लोगों द्वारा उसका आचरण करना ही धम्म विजय है। इस प्रकार प्राप्त विजय सर्वत्र प्रेम से सुरक्षित होती है और यह प्रेम धम्म विजय से मिलता है। अशोक पारलौकिक कल्याण को ही, श्रेष्ठ मानता है। अशोक ने अपने 13वें शिलालेख में बताया है कि अपने राज्यों में 600 योजन तक के सीमांत देश तथा दक्षिण के राज्यों तक में धम्म विजय प्राप्त का आशय धम्म प्रचार अभियान से है।

धम्म का स्वरूप

अशोक के धम्म का वास्तविक अर्थ क्या है? इस प्रश्न पर विद्वानों में एक मत नहीं है। यह विद्वानों के बीच अपनी सार्वभौमिकता, सरलता, दर्शनिक समीक्षा के अभाव में पहली बना हुआ है। विभिन्न विद्वानों ने इसकी प्रकृति की व्याख्या विभिन्न विभिन्न रूपों में की है।

फ्लीट के अनुसार, यह राजधर्म है, जिसका विधान अशोक ने अपने राज्य कर्मचारियों की पालन हेतु किया था, इसका आधार सहिष्णुता, उदारता एवं करुणा था, लेकिन अशोक के अभिलेख से यह स्पष्ट होता है कि यह सभी जनता के लिए था सिर्फ राज्य के कर्मचारियों के लिए नहीं।

फ्रांसीसी विद्वान सेनार्ट के मतानुसार यह पूर्णतया बौद्ध धर्म था परंतु ना तो इसमें त्रिरत्नों का उल्लेख है और ना ही इसका उद्देश्य निर्वाण प्राप्ति है। यह तो पारलौकिक सुख की कामना करता है।

रोमिला थापर के मतानुसार अशोक ने धर्म को प्रशासनिक उद्देश्य से अपने विस्तृत साम्राज्य में एकता स्थापित करने के लिए अपनाया।

नीलकंठ शास्त्री के मतानुसार अशोक का धम्म कोई धर्म नहीं था अपितु तो नैतिक व्यवहार संहिता था।

आर.एस. त्रिपाठी के मतानुसार अशोक के धम्म के तत्व विश्वजनीन है और हम उस पर किसी धर्म के प्रोत्साहन या संरक्षण करने का दोषारोपण नहीं कर सकते हैं।

इतिहासकार डी.डी. भंडारकर के कथनानुसार, अशोक का धम्म उपासक बौद्ध धर्म है। उसके अनुसार बौद्ध धर्म के दो रूप थे, एक भिक्षुओं के लिए जिसमें भिक्षु बौद्ध धर्म और दूसरा गृहस्थों के लिए उपासक बौद्ध धर्म था क्योंकि अशोक गृहस्थ जीवन के रूप में व्यतीत करने वाला एक राजा था। अतः उसने उपासक बौद्ध धर्म को अपनाया था। अशोक ने धम्म की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है। उन्हें बौद्ध ग्रंथ दीर्घनिकाय के सिंगालोवाद सुत में देखा जा सकता है, जो गृहस्थों के लिए निर्देशित है। इसी प्रकार अशोक ने धम्म पालन संबंधी जिन स्वर्गीय सुखों का उल्लेख किया है उन्हें भी विमानवत्थु नामक पालिग्रंथ में वर्णित किया गया है। आज सर्वाधिक विद्वान भंडारकर की व्याख्या को अधिक तर्कसंगत, उपयुक्त एवं विश्वसनीय मानते हैं।

धम्म प्रचार के विशेष उपाय

अशोक ने जिस धर्म को अपनाया और जिसका अपने जीवन के प्रयोग किया उसे जनता तक पहुँचाने हेतु विशिष्ट उपाय भी किया, जिससे सभी इसे आत्मसात् कर इहलौकिक और पारलौकिक सुख प्राप्त कर सकें। अशोक द्वारा धर्म प्रचार हेतु किये गये निम्नलिखित उपाय वर्णित हैं।

धर्म यात्राएँः अशोक ने विहार–यात्राओं का परित्याग कर धर्म यात्राएँ प्रारंभ किया जिसमें वह ब्राह्मणों व श्रमणों का दर्शन, वृद्धों का सेवा, धन से उनके पोषण की व्यवस्था, जनपद के लोगों का दर्शन, धर्म के संबंध में उनसे प्रश्नादि करता था। 8वें शिलालेख के अनुसार अशोक ने अपनी पहली धम्म यात्रा राज्याभिषेक के 10 वें वर्ष बोधगया से की थी। अपने अभिषेक के 14वें वर्ष निग्लीवा (नेपाल की तराई में स्थित) जाकर कनकमुनि बुद्ध के स्तूप को द्विगुणित कराया। अशोक बुद्ध के जन्मस्थल लुम्बिनी ग्राम अपने अभिषेक के 20 वें वर्ष (रुम्मिनदेई अभिलेख) गया

और वहाँ शिला स्तम्भ स्थापित कराया तथा वहाँ का कर 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया। अशोक स्वयं कुल 256 रातें धम्म यात्रा में बिताया था। विंसेट आर्थर स्मिथ ने अशोक की धम्म यात्रा का वर्णन निम्नलिखित क्रम में प्रस्तुत किया है लुम्बिनी, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती।

पदाधिकारियों की नियुक्तिः तीसरे शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने रज्जुकों, प्रादेशिकों और युक्तों को आज्ञा दिया कि वे प्रति पाँचवें वर्ष राज्य में दौरा किया करें और अपने प्रशासकीय कार्यों के अतिरिक्त जनता में धर्मोपदेश दिया करें। संभवतः अशोक सामान्य पदाधिकारियों के सीमित धर्म प्रचार से ही संतुष्ट नहीं हुआ। पाँचवें शिलालेख में वर्णित है, कि उसने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष धम्ममहामात्र नामक नये पदाधिकारियों को नियुक्त किया। इनका प्रमुख कार्य धर्म की रक्षा, धर्म की वृद्धि करना तथा राजा और राज परिवार के सदस्यों से प्राप्त धनदान को धम्म प्रचार के कार्य में नियोजित करना था।

दिव्य रूपों का प्रदर्शनः चौथे शिलालेख के अनुसार अशोक ने मनुष्यों को विमान दर्शन, हस्तिदर्शन और अग्निस्कन्ध आदि दिव्य रूपों का दर्शन कराया। इसका प्रमुख ध्येय लोगों की स्वर्गिक सुख की कामना बढ़े और वे धर्म का अनुसरण करें।

धर्म लिपियों को खुदवानाः छठवें शिलालेख तथा स्तम्भलेख में अशोक कहता है कि राज्याभिषेक के बारह वर्ष बाद मैंने लोगों के हित और सुख संवृद्धि के लिए धम्मलिपियाँ लिखवायीं। ये लेख उसके विशाल साम्राज्य में विस्तृत थे तथा पाषाण पर खुदे होने से चिरस्थायी थे।

विदेशों में धर्म प्रचारकः विदेशों में धर्म प्रचार हेतु अशोक ने अपने धर्म–प्रचारक भेजे। अशोक ने पाँच मित्र यवन राजाओं के राज्य में अपने प्रचारक भेजा था। ये यवन राजा और राज्य निम्नलिखित थेः

1. **अन्तियोकः** सीरिया नरेश एण्टिओकस–आईआई (261–246 ई.पू.)
2. **तुरमयः** मिस्त्र नरेश–टालमी द्वितीय फिलाडेल्फस (285–247 ई.पू.)
3. **अन्तिकिनः** मेसीडोनिया नरेश ऐण्टीगोनस (276–239 ई.पू.)
4. **मगः** सेरीन नरेश – मगस (300–250 ई.पू.)
5. **अलिक सुन्दर–एरिस नरेशः** एलेक्जेण्डर (272–255 ई.पू.)

यवन राजाओं के राज्यों के अतिरिक्त दक्षिण के चोल, पांड्य, ताम्रपर्णि के राज्यों इसी प्रकार यवनों, कम्बोजों, नाभकों और नाभपतियों के बीच तथा वंशानुगत भोज नरेशों, आंधों और पारिन्दों में भी धम्म विजय प्राप्त हुआ था।

दीपवंश एवम् महावंश के अनुसार, अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म की तृतीय संगीति हुई। इसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्ततिस्स ने की थी। इस संगीति की समाप्ति के पश्चात् विभिन्न देशों में धर्म–प्रचारक भेजे गये। उन देशों और धर्म प्रचारकों के नाम निम्नलिखित हैंः

क्र. सं.	धर्म प्रचारक	देश
1.	महारक्षित	यवन देश
2.	महेंद्र तथा संघमित्रा	लंका
3.	सोन तथा उत्तर	सुवर्ण भूमि (वर्मा)
4.	मज्झिम	हिमालय देश
5.	मज्झान्तिक	कश्मीर तथा गंधार
6.	धर्म रक्षित	अपरान्तक
7.	महा धर्मरक्षित	महाराष्ट्र
8.	महादेव	महिषमंडलम (मैसूर)
9.	रक्षित	बनवासी

इन धर्म प्रचारकों के भेजे जाने की पुष्टि साँची के दूसरे स्तूप के एक लेख से होती है जिसमें दस धर्म प्रचारकों के नाम उत्कीर्ण हैं।

लोकोपकारी कार्यः अशोक ने अपने धम्म को लोकप्रिय बनाने के लिए मानव और पशुओं के कल्याण हेतु अनेक कार्य किये। यथाः– पशु–पक्षियों की हत्या निषेध, मानव व पशुओं के लिए चिकित्सा तथा औषधियों की व्यवस्था आदि। जहाँ औषधियाँ उपलब्ध नहीं थीं वहाँ बाहर से मंगाकर रखवायी गई। मार्गों में वृक्ष लगवाया, आम्रवाटिकाएँ लगवायी, आधे–आधे कोस की दूरी पर कुएँ खुदवाए और विश्राम गृहों के लिए भवन बनवाये।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के ऐसे अद्वितीय शासक रहे, जिनका नाम केवल साम्राज्य विस्तार या राजनीतिक उपलब्धियों के कारण नहीं, बल्कि उनकी नैतिक नीतियों और सांस्कृतिक योगदान के कारण भी अमर है। कलिंग युद्ध के पश्चात जिस आत्ममंथन ने उन्हें धर्म परिवर्तन और धम्म के मार्ग की ओर प्रेरित किया, उसने भारतीय इतिहास को नई दिशा प्रदान की। अशोक का धम्म केवल धार्मिक उपदेशों का संग्रह नहीं था, बल्कि एक व्यापक नैतिक–सामाजिक दर्शन था, जिसने भारतीय संस्कृति और सभ्यता की मूल आत्मा को गहराई से प्रभावित किया।

अशोक के धम्म का सबसे बड़ा महत्व यह था कि उसने मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों को शासन और समाज के केंद्र में स्थापित किया। सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, स्त्रियों का सम्मान, माता–पिता एवं आचार्यों के प्रति श्रद्धा और प्राणीमात्र की रक्षा जैसे सिद्धांत आज भी भारतीय संस्कृति के शाश्वत आदर्श माने जाते हैं। इन आदर्शों ने न केवल तत्कालीन समाज में शांति और एकता का वातावरण बनाया, बल्कि भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया।

अशोक के धम्म प्रचार की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इसे केवल उपदेशों तक सीमित नहीं रखा। स्तंभों, शिलालेखों, गुफाओं और स्तूपों के माध्यम से उन्होंने धम्म को जनसाधारण तक पहुँचाया। ये अभिलेख और स्थापत्य आज भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य अंग हैं। विशेषकर सारनाथ का सिंह स्तंभ, जो आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है, इस बात का प्रमाण है कि अशोक की धरोहर केवल अतीत तक सीमित नहीं रही, बल्कि वर्तमान और भविष्य की सांस्कृतिक चेतना का भी आधार बनी।

अशोक के धम्म का प्रभाव केवल भारत तक सीमित न रहा। उनके द्वारा भेजे गए धम्म–दूतों ने श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड और अन्य एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म का प्रसार किया। इस प्रकार अशोक ने भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना को व्यवहारिक रूप दिया।

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की निरंतरता में अशोक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी नीतियों ने यह सिद्ध कर दिया कि संस्कृति केवल धार्मिक अनुष्ठानों या परंपराओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह मानवता, नैतिकता और शांति के आदर्शों पर आधारित जीवन पद्धति है। अशोक का धम्म इन्हीं आदर्शों का व्यावहारिक स्वरूप था, जिसने भारतीय संस्कृति को मानवीयता के उच्चतम स्तर तक पहुँचाया।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी अशोक के धम्म की प्रासंगिकता अत्यंत गहन है। आज जब विश्व हिंसा, असहिष्णुता और सांस्कृतिक संघर्षों से जूझ रहा है, अशोक की शिक्षाएँ शांति, सहअस्तित्व और सांस्कृतिक एकता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। अशोक का धम्म हमें यह संदेश देता है कि स्थायी सांस्कृतिक धरोहर वही है जो मानवीयता, करुणा और शांति के सिद्धांतों पर आधारित हो।

निष्कर्षतः, अशोक का धम्म और उससे जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। अशोक की नीतियाँ यह सिखाती हैं कि सच्ची सांस्कृतिक धरोहर वही है, जो मानवता को एकजुट करे, शांति का वातावरण बनाए और जीवन को उच्चतर नैतिक मूल्यों से संपन्न बनाए। इस दृष्टि से अशोक का धम्म भारतीय संस्कृति का अमर प्रतीक और सार्वभौमिक मानवता का शाश्वत संदेश है।

संदर्भ सूची

1. पांडे, एस.के. (2014) *प्राचीन भारत,* प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद, पृ. 250 – 288।
2. चौबे, सौरभ कुमार (2021) *प्राचीन भारत,* यूनिवर्सल बुक्स, प्रयागराज, पृ. 374–378।
3. मित्तल, एस. के. (2010) *प्राचीन भारत का इतिहास,* साहित्य भवन पब्लिकेसन, आगरा, पृ. 113–119।
5. ओझा, शिवकुमार (2023 – 2024) *प्राचीन भारत का इतिहास,* बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 202–206।
6. श्रीमाली, कृष्ण मोहन (2015) *प्राचीन भारत का इतिहास,* हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 181 – 190.
7. शर्मा, रामशरण (2021) *प्रारंभिक भारत का इतिहास,* ओरिएंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, पृ. 175–177।
8. श्रीवास्तव, के. सी. (2019–20) *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,* यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद, पृ. 227–227।
9. सिंह, उपिन्दर (2024) *प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास,* पिर्यसन इन पब्लिकेशन, नोएडा, पृ. 403–405।
10. दहिया, पूनम दलाल (2024) *प्राचीन और मध्यकालीन भारत,* मैकग्रा हिल एजुकेशन प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 147–156।
11. http://www.globalpagoda.org, Accessed 05/07/2025.

****